प्रचार करना व शिक्षा देना

प्रचार करना व शिक्षा देना: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम परिचय:

II. प्रवचन और शिक्षाएं:

क. प्रवचन और शिक्षाओं में भेद।

ख. एक उपदेश या शिक्षा को तैयार करना।

कक्षा #२:

II. प्रवचन और शिक्षाएं:

ग. प्रवचन या शिक्षाओं का प्रारूप।

घ. विभिन्न प्रकार के उपदेश या शिक्षाएं।

कक्षा #३:

III. सन्देश को कैसे तैयार करें?

IV. सन्देश को कैसे प्रस्तुत करें?

कक्षा #४:

छात्र की शिक्षाएं।

कक्षा #५:

छात्र के उपदेश।

टिप्पणियाँ -

प्रचार करना व शिक्षा देना: परीक्षा।

MOTMOT™ (मोटमोट) पाठ्यक्रम, उपदेश और शिक्षण में अन्य पाठ्यक्रमों की तरह परीक्षा नहीं होगी। शिष्यों को एक सामान्य परीक्षा का समय दिया जाएगा ताकि वह अपने उपदेशों को प्रस्तुत कर सकें।

प्रचार करना व शिक्षा देना

टिप्पणियाँ -

I. पाठ्यक्रम परिचय।

क. संदेश।

१. यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की तरह, हम यह कहे सकते हैं कि प्रचार करना और उपदेश देना मनुष्य के भीतर से शुरू होता है (यिर्म २०:९)। प्रवचन या शिक्षा एक सन्देश होना चाहिए। यह एक ऐसा सन्देश होना चाहिए जो संदेशवाहक के भीतर जन्मा हो और उसने उसे जिया हो।

२. ऐसा कहा जाता है कि केवल दो प्रकार के वक्ता होते हैं:

क. जिनके पास कहने के लिए कुछ है।

ख. जिनको कुछ कहना हो।

३. प्रचारकों और शिक्षकों के पास कहने के लिए कुछ होना चाहिए। वह चलते फिरते सुसमाचार होना चाहिए (२ कुरिन्थियों ३:२,३)।

ख. संदेशवाहक।

१. प्रचारकों और शिक्षकों को प्रेम करने वाले लोग होने चाहिए।

क. जिनसे वे बात करते हैं, उनसे उन्हें प्रेम भी करना चाहिए।

लेखक का उदाहरण:

एक पासबान या शिक्षक जो लोगों से प्रेम नहीं रखते, वह एक ऐसे चरवाहे के समान है, जिसे भेड़ से नफरत है। वह उस स्त्री के समान है, जो परिवार तो चाहती है, पर बच्चों से नफरत करती है।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

ख. उन्हें परमेश्वर के वचन पर अध्ययन करने पर मन लगाना चाहिए।

लेखक का उदाहरण:

एक पासबान या शिक्षक जो परमेश्वर के वचन से प्रेम नहीं करते, वह उस चरवाहे के समान हैं, जो घास के मैदान की खोज करने के लिए तैयार नहीं है। वह उस महिला के सामान है जो परिवार तो चाहती है लेकिन बच्चे जनना नहीं चाहती।

अपना उदाहरण लिखें:

ग. एक अच्छे उपदेश या शिक्षा का निर्माण करना, एक कठिन कार्य है। आपको उसके लिए परमेश्वर की तलाश और बाइबल में से प्रकाशन ढूँढना चाहिए। यह एक प्रक्रिया है। आपको संदेश को जन्म देना चाहिए।

ग. प्रचार करने व शिक्षा देने के दो तरीके।

१. संदेश।

२. संदेशवाहक।

चर्चा विषय

क्या ज़्यादा महत्वपूर्ण है? **संदेश**? या **संदेशवाहक**?
वे एक दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं?

प्रचार करना व शिक्षा देना

घ. पाठ्यक्रम विवरण।

टिप्पणियाँ -

१. यह पाठ्यक्रम प्रचार करने और उपदेश देने के बारे में सामान्य जानकारी देता है।

२. हम यह अध्ययन करेंगे कि **संदेश** को कैसे तैयार किया जाए।

३. हम यह अध्ययन करेंगे कि **संदेशवाहक** संदेश कैसे पहुँचाता है।

४. हम यह अध्ययन करेंगे कि संदेश सुनने वाले श्रोताओं का विश्लेषण कैसे किया जाए।

५. पाठ्यक्रम के बाद के भाग का उद्देश्य छात्रों को आलोचना के लिए कक्षा में प्रस्तुतीकरण देने की अनुमति देना है।

क. यह सिर्फ एक शुरुआती पाठ्यक्रम है। १२-१४ घंटे की शिक्षण सामग्री उपदेश और शिक्षण की मूलभूत समझ देती है। यह सुझाव दिया जाता है कि शिक्षण सामग्री को पाठ्यक्रम के पहले भाग में पढ़ाया जाए।

ख. पाठ्यक्रम के दूसरे भाग का उपयोग छात्रों के लिए प्रचार करने व् शिक्षा देने पर अभ्यास करने के लिए किया जाना चाहिए।

१) यदि संभव हो तो (१५ छात्र या उससे कम), हर छात्र १ उपदेश और १ शिक्षण प्रस्तुत करें।

२) प्रत्येक प्रस्तुति १५-२० मिनट की होनी चाहिए।

३) छात्रों को शिक्षक को एक लिखित रूपरेखा प्रस्तुत करनी चाहिए।

४) प्रस्तुतियों में से एक व्याख्यात्मक संदेश होना चाहिए। दूसरा एक सामयिक संदेश होना चाहिए।

५) प्रत्येक प्रस्तुति के बाद, दूसरे छात्रों व शिक्षकों को प्रस्तुति देने वाले छात्र की रचनात्मक आलोचना करनी चाहिए।

क) छात्रों को बताएँ कि प्रस्तुति के बारे में क्या अच्छा था।

ख) प्रस्तुतिकरण में सुधार कैसे किया जा सकता है, इसके संबंध में सुझाव दें।

टिप्पणियाँ -

६) छात्रों को एक दूसरे का मूल्यांकन व उन्हें अंक देना चाहिए। यहाँ कुछ सुझाव हैं।

क) नमूना मूल्यांकन प्रपत्र के लिए परिशिष्ट देखें।

ख) प्रस्तुति देनेवाले छात्र के लिए मूल्यांकन फॉर्म को पूरा करने के लिए हर बार ५ अलग अलग छात्रों का उपयोग किया जा सकता है। यह उस प्रस्तुति के लिए अंक के ५०% का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

ग) शिक्षक भी मूल्यांकन प्रपत्र को भर सकते है। यह उस प्रस्तुति के अंक के २५% का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

घ) अन्य २५% अंक शिक्षक के मूल्यांकन के हो सकते हैं जो वह प्रस्तुति की लिखित रूपरेखा को देंगे।

II. प्रवचन और शिक्षाएँ।

क. प्रवचनों और शिक्षाओं में अंतर।

१. यह समझना बहुत ज़रूरी है कि इन में सामान्य अंतर है। ये धारणाएं हैंकोई नियम नहीं हैं। वे आपसे मतभेद है बुनियादी अंतर नहीं हैं।

२. सामान्य तौर परए शिक्षा मूल रूप से सैद्धांतिक होती है। प्रवचन अधिक व्यावहारिक होता है।

३. फिर भी, कोई विशेष शिक्षा या किसी शिक्षा का एक भाग किसी प्रवचन या उसके किसी भाग से अधिक व्यावहारिक हो सकता है। शिक्षा व्यावहारिक हो सकती है और उसे व्यावहारिक होना चाहिए।

४. ठीक इसी प्रकार से, एक प्रवचन या प्रवचन का कोई भाग किसी शिक्षा या उसके किसी भाग से अधिक सैद्धान्तिक हो सकता है। प्रवचन सैद्धान्तिक हो सकते हैं और उन्हें धर्मशास्त्र पर आधारित होना चाहिए।

चर्चा विषय

प्रवचनों और शिक्षाओं के बीच सामान्य भेदों की निम्नलिखित सूची का अध्ययन करें। चर्चा को प्रोत्साहित करें। प्रत्येक बिन्दू की व्याख्या करें और उदाहरण दें।

टिप्पणियाँ -

प्रवचन	शिक्षाएं
अधिकतर बल समझाने तथा प्रोत्साहित करने पर लगाया जाता है	अधिक बल निर्देशों और सूचनाओं पर दिया जाता है
दैनिक जीवन से जुड़ी कहानियों और घटनाओं का वर्णन किया जाता है।	अधिकतर रूपकों और वचन से उदाहरणों का इस्तेमाल किया जाता है
शारीरिक मुद्राओं द्वारा बातचीत (नाटकीय ढंग)	चीजों की सहायता ली जाती हैः चार्ट, चित्र, सूचियां
किसी एक बिन्दू या किसी एक विषय पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया किया जाता है	एक विषय तथा वचन के एक भाग पर अधिक सकेन्द्रित होती है
अधिक व्यावहारिक	अधिक सैद्धान्तिक होती है
अधिकतर एक तरफा बातचीत	अधिकतर वार्तालाप होता हैः कक्षा में प्रतिभागिता होती है
भावनाओं और इच्छा को अधिक उभारने वाला होता है	बुद्धिजीवियों को आकर्षित करती हैं।
दैनिक जीवन से जुड़ी बातें अधिक होती हैं।	ज़्यादातर बातें विचारों और धारणाओं को लेकर होती हैं

ख. प्रचवन या शिक्षा को तैयार करना।

१. प्रवचन या एक शिक्षा को एक प्रक्रिया मानकर चलें जिसमें अनके चरण होते हैंः

क. प्रार्थना। परमेश्वर से पूछें कि वह एक विशेष समूह से क्या कहना चाहते हैं।

ख. बाइबल में खोजबीन करें और उससे जुड़े विशेष वचनों को लिखें।

ग. मनन करें।

१) इसके अन्तर्गत उस विषय को बहुत दिनों तक अपने दिमाग में रखा जाता है। परमेश्वर दैनिक जीवन से होने वाली गतिविधियों के द्वारा उसमें नये प्रकाशनों को जोड़ सकते हैं।

२) वह आपको बाइबल में से ही कुछ अन्य बातों को दिखा सकते हैं।

३) वर्तमान घटनाएं, समाचार या परिस्थितियां सम्भवतः उस विषय से जुड़ी हुए अधिक सूचनाओं को प्रदान कर सकती है और उन्हें आपके संदेश के किसी बिन्दू के साथ जोड़ा जा सकता है।

टिप्पणियाँ -

घ. व्यवस्थित करना प्रारम्भ करें।

१) अपने विचारों को श्रेणियों में व्यवस्थित कर दें।

२) तर्कसंगत व प्रभावशाली ढंग से श्रेणियों को क्रमबद्ध करें। एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी के बीच में एक तर्कसंगत प्रारूप के निर्माण करने का प्रयास करें।

ङ. एक बुनियादी रूपरेखा लिखें। इसे अपने सबसे महत्वपूर्ण विचार को लिखने व अपनी श्रोताओं के लिए सर्वोत्तम ढंग से क्रमबद्ध करने के द्वारा प्रारम्भ किया जाता है।

च. रूपरेखा के विशेष भागों की पूर्ति करें। बुनियादी रूपरेखा के मुख्य बिन्दुओं के अन्तर्गत विवरण लिखें।

छ. प्रस्तुत करने से पहले रूपरेखा को कम से कम पांच या छः बार ज़रूर से पढ़ लें।

१) ध्यान दें कि आपको अपनी आवाज़ को ध्वनि और गति बढ़ानी चाहिए।

२) ध्यान में रखें कि कब आप विराम देने जा रहे हैं और कहां आपको अपनी शारीरिक भाषा का इस्तेमाल करना है।

ज. परमेश्वर से अभिषेक और पवित्र आत्मा की उपस्थिति तथा उसकी सेवकाई के लिए प्रार्थना करने के बाद ही अपने प्रवचन को दें।

प्रचार करना व शिक्षा देना

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदारहणः

याद रखें कि एक प्रवचन और एक शिक्षा प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किये जाने से पहले आप में पैदा ज़रूर होनी चाहिए। एक प्रक्रिया है जो जन्म देने की प्रक्रिया के अनुरूप है। एक सुन्दर व नवजात शिशु को संसार में प्रस्तुत किये जाने से पहले, एक कठिन प्रक्रिया से होकर गुज़रना पड़ता है।

प्रक्रियाः

परमेश्वर व उसके वचनों के साथ घनिष्ठता।

गर्भधारण।

प्रतीक्षा (संदेश को आगे ले जाना)।

कठिन कार्य (प्रसव पीड़ाएं)। २तीमुथियुस २:१५ पर ध्यान दें।

संदेश को जन्म देना।

"शिशु" को लोगों को सामने प्रस्तुत करना।

अपना उदाहरण लिखें:

२. किसी बात को दोहराने से न डरें। उसका इस्तेमाल करें। सीखने की प्रक्रिया में ऐसा करना बहुत ज़रूरी है।

क. संदेश के मुख्य विषय या बिन्दु को बार बार बोलें।

टिप्पणियाँ -

ख. किसी चीज़ को दोहराने में रचनात्मक बनें।

१) अगल अगल दृष्टिकोणों से एक ही विषय का उल्लेख करने लिए विषयवस्तु के साथ साथ रचनात्मकता का इस्तेमाल करें।

२) प्रस्तुती की संरचना या प्रारूप में रचनात्मकता का इस्तेमाल दोहराने वाले शब्दों या वाक्यों द्वारा करें जो संदेश को अलग अलग हिस्सों को एक साथ जोड़ता हो।

ग. उन वचनों या वचनों के हिस्सों को बार बार दोहराएं जो आपके संदेशों में जरूरी हों।

३. सकेंद्रित रहें।

क. विशेष व सकेंन्द्रित पदों का इस्तेमाल करें।

ख. हर एक विषय से जोड़कर विस्तृत वर्णन के साथ कम बिन्दुओं का इस्तेमाल करें।

ग. अनुप्रयोगों को विशेष व प्रबल बनाएं।

लेखक का उदाहरणः

जब आप प्रचार या शिक्षा के लिए अनुप्रयोगों को तैयार कर रहे हो तो, बजाय यह कहने के, "इसलिए आपको ईमानदार होना चाहिए"...

आप कह सकते हैं, "जब आप किसी के १० डॉलर गिरे हुए देखते हैं तब आप क्या करते हैं?"

४. याद रखें शिक्षा और प्रचार के दो पहलू होते हैं। दोनों ही आवश्यक होते हैं।

क. संदेशों को तैयार करना। मैं क्या कहता हूं?

ख. संदेश को प्रस्तुत करना। मैं कैसे कहता हूं?

१) बिना तैयारी की गयी प्रस्तुति प्रायः समय की बर्बादी होती है। प्रस्तुति ठीक ढंग से की हो सकती है, लेकिन उसमें कहने के लिए ज्यादा नहीं है।

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

एक संदेश जिसकी प्रस्तुति तो अच्छे ढंग से की गयी हो लेकिन उसकी तैयारी गम्भीरता से न हुई हो तो वह उस दवाई के समान है जो खाने में स्वादिष्ट होती है लेकिन होती है बेअसर है।

अपना उदाहरण लिखें:

२) अच्छी तरह से प्रस्तुत न किया जाए तो बहुतायत से गयी तैयारी भी समय की बर्बादी ठहरती है। बातें तो बहुत सी होती है, लेकिन अप्रभावशाली प्रस्तुति के कारण लोगों को उससे कोई लाभ नहीं पहुंचता है।

लेखक का उदाहरण:

एक संदेश जो गम्भीरता के साथ तैयार किया जाता है लेकिन उत्तमता के साथ प्रस्तुत नहीं किया जाता है वह एक ऐसी प्रभावशाली दवाई के समान है जिसका स्वाद इतना कड़वा होता है कि अधिकतर लोग, उसे खाना ही नहीं चाहते।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

ग. प्रवचनों और शिक्षाओं का प्रारूप।

१. एक प्रवचन या एक शिक्षा को सदैव एक परचिय या प्रस्तावना के साथ प्रारम्भ करना चाहिए।

क. मैं क्या कहूंगा?

१) प्रस्तावना से लोगों को यह पता चलना चाहिए कि आप अब क्या कहने जा रहे हैं।

२) प्रस्तावना के अन्त में एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रदान की जा सकती है जिसमें जो संदेश के अनेकों भागों को उसके उद्देश्यो को दर्शा सकते हैं।

अपना उदाहरण लिखें:

किसी प्रस्तावना या परिचय के अन्त में दी गयी रूपरेखा का उदारहण कुछ ऐसा हो सकता है, "और अब हम इन बातों पर ध्यान देगें..."

निराशा के कुछ सामान्य कारण।
निराशा के कुछ प्रभावशाली उपचार।
निराशा से बचने के कुछ तरीके।

अपना उदाहरण लिखें:

ख. अन्य लोग आपकी बातें क्यों सुनें?

१) एक प्रस्तावना के द्वारा लोगों को सुनने का कारण मिलना चाहिए। इससे उनके भीतर रूची उत्पन्न होनी चाहिए।

प्रचार करना व शिक्षा देना

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

एक आदमी था जो अपने खच्चर को सिखाना चाहता था। इसलिए उसने खच्चर क कानों के बीच में एक छड़ी से मारा। वह खच्चर लगभग बेहोश अवस्था में नीचे गिर गया। किसी व्यक्ति ने उस आदमी से पूछा, "तुमने उसके साथ ऐसा क्यों किया?" उस आदमी ने उत्तर दिया, "खच्चर को सिखाने के लिए सबसे पहले उसके ध्यान का आकर्षित करना ज़रूरी है।"
यह बात लोगों के साथ बिल्कुल सही ठहरती है। किसी चीज़ को सीखने से पहले उसके प्रति रूची उत्पन्न होना ज़रूरी है।

अपना उदाहरण लिखें:

२) लोगों के भीतर रूची को उत्पन्न करने के लिए बहुत से तरीके हैं।

क) लोगों को प्रोत्साहित करें।

लेखक का उदाहरण:

संदेश देते समय आप रूची बढ़ाने के लिए कह सकते हैं, "क्या आप प्रभावशाली ढंग से प्रार्थना करना जानते हैं? जब आप प्रार्थना करते हैं तो क्या आपको उत्तर मिलता है?"

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

ख) उन्हें सूचित करने की प्रतिज्ञा करें।

लेखक का उदाहरण:

श्रोताओं को सूचित करने का एक तरीका यह हो सकता है, "आज मैं आपको बताना चाहता हूं कि आपको अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर किस प्रकार से मिल सकता है?"

अपना उदाहरण लिखें:

ग) उल्लेख करें कि आपका विषय उनके जीवन से जुड़ा व महत्वपूर्ण है।

लेखक का उदाहरण:

अपने श्रोताओं के सामने यह कह कर आप अपने विषय को महत्व दर्शा सकते हैं, "यदि आपकी प्रार्थनाएं जितनी प्रभावशाली होंगी, उतने ही ज्यादा आप सफल होंगे। आपकी प्रार्थनाओं के जितने अधिक उत्तर आपको मिलेगें, उतनी ही आशीषें आपको अपने जीवन में प्राप्त होगीं। सर्वदा प्रार्थना होने के कारण सर्वदा आशा बनी रहती है।"

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

घ) समस्या को सामने रखें और एक समाधान की प्रतिज्ञा करें (एक प्रतिज्ञा करें)।

लेखक का उदाहरण:

समस्या को सामने रखने और उसका समाधान करने का एक तरीका यह हो सकता है, "प्रभावहीन प्रार्थनाओं में बहुत अधिक समय बीत गया है, आज हम प्रभावशाली ढंग से प्रार्थना करना सीखना चाहते हैं ताकि हमारी हर एक प्रार्थनाओं का उत्तर मिल सके।"

अपना उदाहरण लिखें:

ग. एक परिचय एक पूर्व संकेतक होनी चाहिए। इससे लोग चौकन्ने हो जाने चाहिए। आपके परिचय से लोगों की रूची बढ़नी चाहिए।

१) मज़ाकिया कहानियों का इस्तेमाल करें। कई बार वास्तविक जीवन से जुड़ी व्यक्तिगत परिस्थितियां व गूढ सच्चाई लोगों को हास्यवृति प्रदान करती हैं।

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

एक परिचय की कहानी हो सकती है कि, "कल मैं ने एक घण्टा प्रार्थना की। लेकिन समस्या यह थी कि पूरे समय मेरा ध्यान भटकता ही रहा, मैं पूरे समय अपने दिन भर के कामों के बारे में ही सोचता रहा। उस घण्टे के अन्त में मेरे दिमाग में पूरे दिन के कामों को लेकर बहुत अच्छी योजना तैयार हो गयी। वह कितना फलदायी व सुन्दर घंटा था (रूकें)। बाकि का दिन बड़ा खराब गया। मेरा कोई भी काम नहीं बना (रूकें)। फिर भी, कुछ काम हुआ या नहीं हुआ मैं कम से कम सुव्यवस्थित तो था (रूकें)। मैं सम्भवतः अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रार्थना करने का प्रयास करूंगा।"

अपना उदाहरण लिखें:

क) हास्य, बातचीत करने का एक शक्तिशाली हथियार है। यह "सुनने के लिए अच्छे माहौल" का निर्माण करता है और लोगों को रक्षात्मक रवैये से बाहर निकालता है क्योंकि लोग समझाते समय अधिकतर यह रवैय्या अपना लेते हैं। इससे रूची बढ़ती है।

ख) सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, जो व्यक्ति किसी चीज़ पर हंसता है वह उस चीज़ के लिए अति गम्भीरता से सोचने के लिए तैयार होता है। जब वह हंसना बन्द कर दे, तब वह उस हास्य से जुड़े गम्भीर संदेश का मूल्यांकन करे तथा उस पर ध्यान दे।

टिप्पणियाँ -

२) **अचम्भित करने वाली गणनाओं को इस्तेमाल करें।**

लेखक का उदाहरण:

अचम्भित करने वाली गणनाओं का उदाहरण हो सकता है कि, "५०: विवाहों का अन्त तलाक होता है। लेकिन प्रार्थना करने वाले विवाहित लोगों में १: से भी कम लोगों को अपने जीवन में तलाक ही ज़रूरत पड़ती है।"

अपना उदाहरण लिखें:

२. एक प्रवचन या एक शिक्षा एक निष्कर्ष के साथ समाप्त होना चाहिए।

क. मैं ने ऐसा क्यों कहा?

१) निष्कर्ष में एक संक्षिप्त सार निहित होना चाहिए।

लेखक का उदाहरण:

एक निष्कर्ष का उदाहरण ऐसा हो सकता है, "इस तरह हम ने निराशा के कुछ कारणों को देखा। हम ने उसके बहुत समाधानों का भी अध्ययन किया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम ने निराशा से बचने के बहुत से तरीकों के सुझाव भी दिये हैं।"

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

२) निष्कर्ष में प्रायः यह प्रभावशाली होता है कि हम पुनः सारी चीज़ों को परिचय के साथ जोड़ दें।

लेखक का उदाहरण:

परिचय से सारी बातों को जोड़ने का एक उदाहरण यह हो सकता है, "क्या आपका विवाह उन ५०: विवाहों में से एक होगा जिसका अन्त तलाक होता है?"

अपना उदाहरण लिखें:

ख. इससे आपके लिए क्या आशय हैं?

१) निष्कर्ष में एक मज़बूत चुनौति निहित होनी चाहिए। चुनौति या प्रोत्साहन विशेष होना चाहिए। श्रोताओं को निर्णण लेने के लिए मज़बूर करें।

लेखक का उदाहरण:

निष्कर्ष में निहित चुनौति का उदाहरण इस प्रकार से कह सकता है, "क्या आप अपनी पत्नी के साथ विवाह करते हैं? कल के बारे में आप क्या सोचते हैं? आज ही एक निर्णय लें ताकि आपका विवाह विवाहित जीवन हमेशा तक बना रह सके। अपनी पत्नी के साथ प्रार्थना करें। अपने पति के साथ प्रार्थना करें।"

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

२) निष्कर्ष से सुनने वालों को प्रोत्साहन मिलना और दर्शन आगे बढ़ना चाहिए।

लेखक का उदाहरण:

निष्कर्ष में प्रोत्साहित करने के उदारहण में कुछ इस तरह कहा जा सकता है, "मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूं कि आप साथ मिलकर **आज** एक योजना बनाएं किस प्रकार आप **कल** सब साथ में प्रार्थना करेगें। आप चाहें तो धीमी शुरूआत कर सकते हैं। सुबह उठने के बाद पांच तथा रात में सोने से पहले पांच मिनट प्रार्थना करने की योजना बना सकते हैं।"

अपना उदाहरण लिखें:

ग. किसी अन्य संदेश या विषय के साथ समाप्त करने से बचें। कब और कैसे समाप्त करना है जानना बहुत महत्वपूर्ण है।

लेखक का उदाहरण:

प्रवचन को समाप्त करने के सन्दर्भ में इस बात पर ध्यान दें। किसी ने एक नये प्रचारक को सलाह दीः "प्रचवन एक अच्छे भोजन के समान है। आपको पूरा साफ करने से पहले खाना रोक देना चाहिए।"

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

३. एक प्रवचन या एक शिक्षा की एक "संरचना" होती है। उस संरचना में संदेश का विस्तृत उल्लेख होता है। परिचय में आप लोगों को बताते हैं कि आप क्या कहेगें। निष्कर्ष में, आप उन्हें बताते हैं कि आपने उनसे क्या कहा। उसकी संरचना में भीतर, आपको बताना है कि उसे कहना है!

क. संरचना में मुख्य बातें होती हैंः आपको अपने प्रवचन को ३-५ मुख्य भागों में विभाजित कर लेना चाहिए। एक शिक्षा में अधिक प्राथमिक बिन्दु हो सकते हैं।

लेखक का उदाहरणः

उदाहरण के लिए, निम्न रूपरेखा को "किस तरह से प्रभावशाली प्रार्थना की जाए" नामक प्रवचन या शिक्षा के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

प्रार्थना करते समय मैं कौन हूं।

मैं किस लिए प्रार्थना करता हूं।

मैं इसके लिए कैसे करता हूं।

मुख्य बातों को दोहराना प्रायः प्रभावशाली रहता है ("मैं प्रार्थना करता हूं" के दोहराए जाने पर ध्यान दें)।

अपना उदाहरण लिखें:

ख. उप बिन्दूः प्रत्येक मुख्य बिन्दू के अपने उप बिन्दू हो सकते हैं।

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरणः

उदारहण के लिए, निम्नलिखित रूपरेखा उप बिन्दुओं के उदाहरण को दर्शाती हैः

१. प्रार्थना करते समय मैं कौन हूं।

- विश्वासी की पवित्रता।
- विश्वासी का अधिकार।

२. मैं किस चीज़ के लिए प्रार्थना करता हूं।

- परमेश्वर की इच्छा में प्रार्थना कर रहा हूं।
- प्रार्थना के उद्देश्य।

३. मैं इसके लिए कैसे प्रार्थना करता हूं।

- विश्वास में।
- प्रेम के साथ।

अपना उदाहरण लिखेंः

टिप्पणियाँ -

ग. प्रत्येक मुख्य बिन्दु या प्रत्येक उप-बिन्दु में (यह संदेश की अवधि पर निर्भर करता है) व्याख्या, उदारहण और अनुप्रयोग निहित होने चाहिए।

१) व्याख्या वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम बिन्दु के अर्थ को समझाते हैं। उदारहण के लिएः

क) उस पद का अर्थ क्या है?

ख) शुद्धता क्या है?

ग) यह प्रार्थना को कैसे प्रभावित करती है?

२) उदारहण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत हम एक परिस्थिति का वर्णन और उसे प्रस्तुत करते हैं जिसमें वह बिन्दू देखा जा सकता है। प्रचारक या शिक्षक निम्नलिखित चीज़ों का इस्तेमाल कर सकता हैः

क) बाइबल की कहानियां या सिद्धान्त (कल्पना करें कि आप इब्रानियों ५:७ का उपयोग करते हुए कैसे उदाहरण दे सकते हैं कि किस प्रकार शुद्धता प्रार्थना को प्रभावित करती है)।

ख) समरूपता (प्रार्थना में शुद्धता ठीक वैसे ही काम करती है जैसे कि मधुर ध्वनि देने के लिए एक साफ तुरही)।

ग) आपके व्यक्तिगत जीवन से उदारहण।

घ) ऐतिहासिक घटनाएं।

ङ) उद्धरण।

च) वर्तमान घटनाएं।

३) अनुप्रयोग एक ऐसी प्रक्रिया है जो श्रोता द्वारा सुने गये बिन्दु को उसके जीवन में व्यावहारिक बनाती है।वह उस शिक्षा को श्रोता के घर, कार्यालय, स्कूल और दैनिक जीवन तक लेकर जाती है। श्रोता सुन सकता और महसूस कर सकता है कि वह बिन्दु उस से किस प्रकार जुड़ा हुआ है। प्रचारक और शिक्षक निम्न बातों का उपयोग कर सकते हैंः

क) चुनौतिपूर्ण प्रश्न। (क्या आप विश्वास करते हैं कि जो कुछ आप प्रार्थना में मांग रहे हैं वह काम परमेश्वर प्रार्थना में कर सकते हैं या करेगें?)

ख) काल्पनिक परिस्थिति। (आप अपने भोजन के लिए प्रार्थना कर रहे है। एक दुकानकार आपको खरीदारी के बाद पैसे लौटाते समय १० डॉलर अधिक दे देता है। आप क्या करेगें? क्या आप उस दुकानदार को ईमानदारी से बताने वाले हैं?)

टिप्पणियाँ -

ग) इनमें से कोई भी सहायक घटक उदाहरण के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है (समरूपता, वर्तमान घटनाएं इत्यादि।)। कई बार उदाहरण हमें अपने आप सीधा अनुप्रयोग की ओर ले जाते हैं।

घ. देह के लिए अन्य सुझाव।

१) परिवर्तनों का होना अति महत्वपूर्ण है। एक बिन्दू से दूसरे बिन्दू तक स्पष्ट तरीके से पहुंचने के लिए कठिन परिश्रम करें। किसी प्रवचन या शिक्षा का बहाव अच्छे स्थिति परिवर्तन के बोध पर निर्भर करता है।

लेखक का उदाहरण:

एक बिन्दु से दूसरे बिन्दू तक जाने हेतू स्थिति परिवर्तन करने के एक उदाहरण के रूप में आप कह सकते हैं, "जी हां, यदि मैं प्रभावशाली ढंग से प्रार्थना कर रहा हूं तो मेरे लिए प्रार्थना करना बहुत महत्वपूर्ण है। फिर भी, चाहे मैं सही चीज़ों के लिए प्रार्थना करूं, लेकिन यदि मैं सही ढंग से प्रार्थना नहीं कर रहा हूं तो मेरी प्रार्थनाएं प्रभावशाली नहीं होंगी। चलिए अब हम प्रभावशाली प्रार्थना के संदर्भ में अपने तीसरे बिन्दू को देखें: 'मैं इसके लिए किस प्रकार प्रार्थना करता हूं।'"

अपना उदाहरण लिखें:

२) आपकी रूपरेखा की संरचना आपके लेखों में बिल्कुल स्पष्ट होनी चाहिए। मुख्य बिन्दू तथा उप बिन्दू आपके कागज़ों में उचित क्रम में लिखे होने चाहिए। तब, यह उम्मीद की जा सकती है कि वे बिन्दु सुनने वालों को भी स्पष्टता से समझ में आएगें। प्रवचन या शिक्षा का बहाव इस बात पर निर्भर करता है कि एक प्रचारक या शिक्षक किस प्रकार से अपने बिन्दुओं के बीच भेदों को प्रगट कर सकता है।

३) मुख्य बिन्दुओं और उप बिन्दुओं को समझाने वाले विशेष वचन स्पष्ट तौर पर जुड़े होने चाहिए।

टिप्पणियाँ -

४. अगर प्रवचन या शिक्षा को कोई नाम या शीर्षक दिया जाए तो उसे बहुत आसानी से याद किया जा सकता है।

क. एक रचनात्मक शीर्षक होना लाभदायक हो सकता है।

लेखक का उदाहरण:

प्रवचन कें शीर्षक के विषय में, "किस तरह प्रभावशाली ढंग से प्रार्थना करें" की बजाय, आप "किस प्रकार से प्रार्थना में निवेश करने का अच्छा लाभ मिलता है।" शीर्षक का उपयोग कर सकते हैं।

अपना उदाहरण लिखें:

ख. एक रचनात्मक शीर्षक किसी संदेश या शिक्षा के दिये जाने से पहले ही उसके लिए रूची उत्पन्न कर देता है। इससे लोगों को संदेश या शिक्षा को सुनने के बाद उसे याद करने में सहायता मिलती है।

ग. लेकिन, उसे अति महत्वपूर्ण या पवित्र चीज़ के रूप में नहीं दर्ज़ा नहीं दिया जाना चाहिए।

घ. विभिन्न प्रकार के प्रवचन और शिक्षाएं।

१. सामयिक संदेश।

क. इस प्रकार के संदेश बाइबल के एक विषय पर आधारित होते हैं।

ख. यह बाइबल के अनकों अनुच्छेदों पर आधारित होते हैं।

ग. एक समायिक संदेश निगमनात्मक ढंग से तैयार किया गया प्रतीत होता है (यद्यपि इसे आगमनात्मक रूप में भी विकसित किया जा सकता है)। एक विषय को चुना जाता है। उसके बाद प्रचारक या शिक्षक उसके आधार पर संदेश तैयार करने तथा सिद्धान्तों के लिए बाइबल की खोज करते हैं।

घ. उदाहरण के लिए, यदि किसी संदेश का विषय या शीर्षक है "किस प्रकार से प्रार्थना में निवेश करने का अच्छा लाभ मिलता है" उसकी रूपरेखा ठीक वैसी हो सकती है जिसका उपयोग हमने पहले किया था।

टिप्पणियाँ -

२. व्याख्यात्मक संदेश।

क. इस प्रकार के संदेश बाइबल के एक अनुच्छेद पर आधारित होते हैं।

ख. प्रचारक या शिक्षक अन्य वचनों की सहायता लेता है लेकिन उसका सकेन्द्र धर्मशास्त्र के विशेष खण्ड पर होता है।

ग. एक व्याख्यात्मक संदेश को आगमनात्मक तरीके से तैयार किया जाना चाहिए। जिसमें एक अनुच्छेद या खण्ड को चुना जाता है। एक प्रचारक या शिक्षक वह अनुच्छेद क्या कह रहा है के संदर्भ में संदेश तैयार करने के लिए उस अनुच्छेद का अध्ययन करता है।

लेखक का उदारहणः

एक व्याखयात्मक संदेश जिसका शीर्षक हो कि, "किस प्रकार से प्रार्थना में निवेश करने का अच्छा लाभ मिलता है।" मत्ती ६:५-१५ पर आधारित हो सकता है। उसकी "संरचना" की रूपरेखा निम्न हो सकती हैः

१. किस प्रकार प्रार्थना करें (पद ५-८)।

- बिना कपट के (पद ५, ६)।

- बिना किसी परम्परा के (पद ७, ८)।

२. क्या प्रार्थना करें (पद ९-१३)।

स्तुति (पद ९)।

निवेदन (पद १०)।

उपाय (पद ११)।

अपने लिए क्षमा (पद १२ क)।

दूसरों के लिए क्षमा (पद १२ ख)।

सुरक्षा (पद १३ क)।

प्रशंसा (पद १३ ख)।

३. कब प्रार्थना करें (पद १४, १५)। (दूसरों को क्षमा करने के बाद)।

टिप्पणियाँ -

अपना उदाहरण लिखें:

III. संदेश किस प्रकार तैयार किया जाए।

लेखक का उदाहरणः

१६वीं शताब्दी के एक विद्वान, फ्रासिंस ने इस प्रकार से कहा, "कई विद्यार्थी कभी पढ़ते नहीं है, लेकिन एक मकड़ी के समान होते हैं, जो वहीं बाहर फेंकते हैं जो उनके भीतर होता है, और ऐसा जाल बनाते हैं जो कभी सदा तक नहीं टिकता। कुछ विद्याथी चीटियों के समान होते हैं, जो उनके हाथ लगता है वह उसे चुरा लेते हैं, और फिर उसे बाद में इस्तेमाल करते हैं। लेकिन एक मधुमक्खी हमारे लिए एक आदर्श है, वह अनेकों फूलों से रस चूसती तो है, लेकिन अपना ही मधु बनाती है।"[१]

अपना उदाहरण लिखें:

प्रचार करना व शिक्षा देना

टिप्पणियाँ -

क. खोजबीन करके संदेश तैयार करना।

१. हम पहले ही कह चुके हैं कि एक संदेश को तैयार करने के लिए अपने विचारों को लिखित रूप में व्यवस्थित करना तथा एक लिखित रूपरेखा तैयार करना जरूरी है।

२. हमें अन्वेषण या खोज करके अपनी सामग्री को तैयार करना चाहिए। "अन्वेषण" एक प्रक्रिया है जिसमें तथ्यों को खोजा और बताया जाता है। जब भी कभी हमारे सामने कोई प्रश्न उठता है, हम उसके उत्तर का पता करने लिए सभी आवश्यक जानकारियों को एकत्र करते हैं, यह प्रक्रिया अन्वेषण कहलाती है। इसमें कभी कभार किताबों और पुस्तकालयों की आवश्यकता पड़ सकती है,लेकिन हमेशा जरूरी नहीं है। इसमें दूसरों की राय लेना, या फिर विपरीत विचारों से तुलना करना शामिल होता है। लेकिन मूल रूप से यह प्रश्न पूछने और उसके उत्तर ढूंढने की एक प्रक्रिया है।

क. बाइबल में खोजें।

ख. धर्मशास्त्र व आध्यात्म से जुड़ी पुस्तकों को खोजें।

ग. दूसरों के साथ चर्चा करने के द्वारा खोजें।

घ. दैनिक जीवन के अनुभवों में खोजें।

३. हमें संदेश के मूल भाव का ध्यान में रखते हुए अपनी सामग्री तैयार करनी चाहिए। हमें परमेश्वर को हमारे अनोखे व्यक्तित्व व वरदानों का इस्तेमाल करते हुए ताजें व तर्कसंगत सामग्री का इस्तेमाल करने की अनुमति देनी चाहिए।

ख. व्याख्यात्मक संदेशों के लिए सामग्री तैयार करना।

लेखक की टिप्पणीः

अधिक विस्तृत बाइबल के टीका पर मनन करने के लिए MOTMOT (मोटमोट) की बाइबल अध्ययन नामक दूसरी पुस्तक को देखें।

इस अध्ययन के लिए, हम केवल धर्मशास्त्र के कुछ सम्भावित अभ्यासों को ही प्रदान करेगें। विद्यार्थियों की कार्यशाला किस्म के अध्ययन में अगुवाई करें। उन्हें धर्मशास्त्र के कुछ खण्डों की रचनात्मक रूपरेखा बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

टिप्पणियाँ -

कक्षा अभ्यास #१:

मत्ती ११:२०-३० का एक अध्ययन।

विद्यार्थियों से अनुच्छेद पढ़ने के लिए कहें। एक कक्षा के रूप में, शिक्षा देने के लिए एक बुनियादी रूपरेखा को तैयार करना प्रारम्भ करें।

१. यीशु की सेवकाई में निराशा एक वास्तविकता थी (पद २०-२४)।

२. यीशु ने निराशा को लाभ में परिवर्तित कर दिया (पद २५-२७)।

क. उन्होंने स्तुति की (पद २५)।

ख. उन्होंने परमेश्वर की श्रेष्ठता पर ध्यान दिया और उसे माना (पद २५, २६)।

ग. उन्होंने परमेश्वर के पुत्र के रूप अपनी पहिचान को याद रखा और साहस के साथ उसे धारण किया (पद २७)। (हमें अपनी बुलाहट को याद रखना और उसमें अटल बने रहना है।)

३. निराशा के ऊपर विजय प्राप्त करने का परिणाम फलदायी या लाभकारी सेवा के लिए उपलब्ध होना होता है (पद.२८-३०)। (जब हम विजय पाते हैं,तब हम भी उपलब्ध होते हैं)।

आप किस तरह से विस्तृत वर्णन के साथ इस रूपरेखा को तैयार करेगें? आप इस सब को मिलाकर एक प्रवचन कैसे तैयार करेंगें?

आप इस संदेश को क्या शीर्षक देगें?

सामयिक संदेशों के लिए सामग्री तैयार करना।

टिप्पणियाँ -

कक्षा अभ्यास #२:

मरकुस ५:३५-४३ का एक अध्ययन।

विद्यार्थियों से अनुच्छेद पढ़ने के लिए कहें। एक कक्षा के रूप में, एक प्रवचन की बुनियादी रूपरेखा तैयार करें।

१. जागृतिः लड़ाई (पद ३५)।

२. जागृतिः विश्वास (पद ३६, ३७)।

३. जागृतिः अनुभूतियां (पद ३८-४१)।

४. जागृतिः भोजन खिलाना (पद ४२,४३)।

आप किस तरह से विस्तृत वर्णन के साथ इस रूपरेखा को तैयार करेगें?

इसके द्वारा आप एक शिक्षा को किस प्रकार तैयार करेंगें?

इस सन्देश को आप क्या शीर्षक देना चाहेंगे?

ग. सामयिक संदेशों के लिए सामग्री तैयार करना।

लेखक की टिप्पणीः

सामयिक संदेशों के सम्बन्ध में कहने के लिए बहुत कुछ है। एक आगमनात्मक तरीके से सामयिक संदेशों (विशेषकर शिक्षा सम्बन्धी सामग्री) को तैयार करने सामान्य समझ प्राप्त करने की कोशिश करें। हम इस कार्य को बाइबल अध्ययन में प्राप्त विशेष सिद्धान्तों के निर्माण से धर्मशास्त्र के सामान्य क्षेत्रों को व्यवस्थित करने की ओर बढ़ेगें।

१. (यूहन्ना की पुस्तक ६-८ का इस्तेमाल करते हुए) निम्नलिखित प्रक्रिया पर ध्यान दें।

क. बाइबल के **सिद्धान्तों** को लिखें।

१) उदाहरण के लिए: भले कार्य सीधे तौर पर विश्वास से जुड़े हैं (यूहन्ना ६:२८, २९)।

२) सम्भवतः आपको ३० बाइबल के **सिद्धान्त** मिल जाएंगें।

टिप्पणियाँ -

ख. इन सिद्धांतों को विषयों में व्यवस्थित करें।

१) इस सिद्धांत की प्रासंगिकता क्या है?

२) प्रत्येक सिद्धांत के लिए एक या दो शब्द का शीर्षक देने का प्रयास करें।

३) ये शीर्षक आपके विषय होंगे।

४) प्रत्येक सिद्धांत के लिए एक से अधिक विषय रखे जा सकते हैं उदाहरण के लिए, उपरोक्त सिद्धांत को "विश्वास" और "अच्छे कार्य" नाम के विषय दिए जा सकते हैं।

५) कई विषयों में एक से अधिक सिद्धांत हो सकते हैं। शायद आप ३० सिद्धांतों को १५ विषयों में व्यवस्थित कर सकते हैं।

६) एक बार विषय देने के बाद, आपको यह विचार करके इन्हें सिद्धांतों की एक श्रृंखला में व्यवस्थित करना चाहिए ताकि प्रत्येक सिद्धांत अगले सिद्धांत से जुड़ सके।

७) प्रत्येक विषय के सिद्धांतों को तार्किक क्रम में रखें।

ग. इन **विषयों** को **प्रसंगों** में व्यवस्थित करें।

१) कुछ विषयों में कुछ बातें समान होंगी।

क) उदाहरण के लिए, आपके पास "विवाह" और "पड़ोसी" नाम के दो विषय हो सकते हैं।

ख) याद रखें कि इनमें से प्रत्येक विषय में ऐसे सिद्धांत हैं जिन्हें एक क्रम या "श्रृंखला" में रखा गया है।

ग) इन दो विषयों को मिलाकर एक विषय बनाया जा सकता है जिसे "मानवीय सम्बन्ध" कहा जा सकता है।

२) शायद १५ विषयों को ८ विषयों में व्यवस्थित किया जा सकता है।

टिप्पणियाँ -

घ. **प्रसंगों** को **श्रेणियों** में व्यवस्थित करें।

१) शायद आपके पास "मानवीय सम्बन्ध" और "मानवीय समस्याएं" नाम के दो विषय हो सकते हैं। इन दो विषयों को "मानवीय" नामक एक श्रेणी में रखा जा सकता है।

२) आप आठ विषयों को चार श्रेणियों में व्यवस्थित कर सकते हैं।

ङ. **श्रेणियों** को **क्षेत्रों** में व्यवस्थित करें।

१) उदाहरण के लिए, आपके पास "मानवीय" और "विश्व का इतिहास" नाम की दो श्रेणियाँ हो सकती हैं। इन दो श्रेणियों को एक क्षेत्र में रखा जा सकता है।

२) आप चार श्रेणियों को दो क्षेत्रों में व्यवस्थित कर सकते हैं।

च. सभी स्तरों (सिद्धांतों, विषयों, प्रसंगों, श्रेणियों, क्षेत्रों) का उपयोग करने का विचार नहीं है।

१) आपको उन सभी का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है, खासकर तब यदि आपके पास शुरू करने के लिए बहुत सारे सिद्धांत नहीं हैं।

२) बाइबल के सिद्धांतों को खोजने और उन्हें तार्किक और प्रभावी तरीके से व्यवस्थित करने का विचार है।

क) उदाहरण के लिए, आपके ३० सिद्धांतों को दस विषयों में व्यवस्थित किया जा सकता है।

ख) उन दस विषयों को तीन प्रसंगों में व्यवस्थित किया जा सकता है।

ग) हो सकता है कि आपको श्रेणियों और क्षेत्रों का उपयोग न करना पड़े।

२. इस प्रक्रिया के एक संक्षिप्त संस्करण के माध्यम से छात्रों की अगुवाई करें।

टिप्पणियाँ -

३. "सुसमाचार प्रचार" पर एक सामयिक सन्देश या शिक्षण को विकसित करने के लिए इस प्रकार की प्रक्रिया का उपयोग कैसे किया जा सकता है?

क. सुसमाचार प्रचार के विषय में शास्त्रों को खोजने के लिए एक निर्देशिका का प्रयोग करें।

ख. शास्त्रों को विषयों में व्यवस्थित करें (प्रत्येक विषय के भीतर पदों या सिद्धांतों की एक श्रृंखला या क्रम है)। उदाहरण के लिए:

१) सुसमाचार प्रचार का महत्व।

२) सुसमाचार प्रचार का उद्देश्य।

३) सुसमाचार प्रचार के तरीके।

४) सुसमाचार प्रचार के स्त्रोत।

५) सुसमाचार प्रचार के परिणाम।

६) सुसमाचार प्रचार की आवश्यकता।

७) सुसमाचार प्रचार करने की प्रेरणा।

८) सुसमाचार प्रचार करने के लिए संसाधन।

ग. विषयों को प्रसंगों में व्यवस्थित करें। उदाहरण के लिए:

१) सुसमाचार प्रचार क्यों करें? (महत्व, उद्देश्य, परिणाम, आवश्यकता)।

२) सुसमाचार प्रचार कैसे करें? (तरीके, स्रोत, प्रेरणा, संसाधन)।

घ. अब आप एक संदेश तैयार करने के लिए तैयार हैं।

IV. संदेश प्रस्तुत कैसे करें।

टिप्पणियाँ -

लेखक की टिप्पणी:

हमें विभिन्न संचार तकनीकों और सिद्धांतों पर संक्षेप में विचार करने की आवश्यकता है। आप जो कहते हैं, उससे कहीं अधिक संचार है। आप जैसा कहते हैं वैसा ही होता है।

संचार अध्ययनों से पता चला है कि एक वक्ता की प्रभावशीलता उसकी प्रस्तुति पर बहुत अधिक निर्भर करती है। प्रस्तुति के लगभग ९०% में शरीर की मुद्रा, चेहरे के भाव और आवाज़ जैसी चीज़ें शामिल होती हैं।

उदाहरण के लिए, हास्यपूर्ण कहानी कहने की कुंजी प्रस्तुति है। हास्य अभिनेता का कहना है कि कॉमेडी १०% विषय और ९०% समय है। यही कारण है कि दो अलग-अलग कॉ हास्य अभिनेता एक ही कहानी का उपयोग कर सकते हैं और एक ही दर्शक से पूरी तरह से अलग प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकते हैं।

क. संचार के सिद्धांत।

१. श्रोता विश्लेषण।

क. आप किससे बात कर रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर आपकी प्रस्तुति को प्रभावित करेगा।

ख. प्रस्तुति के पहले, दौरान और बाद में दर्शकों का विश्लेषण किया जाना चाहिए।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

निम्नलिखित समूहों पर विचार करें और चर्चा करें कि प्रत्येक श्रोता के लिए आपकी प्रस्तुति कैसे अलग होगी - बच्चे, किशोर, वरिष्ठ नागरिक, अविश्वासी, या उदासीन विश्वासी।

२. प्रतिक्रिया।

क. प्रचारक या शिक्षक को अपने श्रोताओं की प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण करना चाहिए।

ख. उसे कई अलग-अलग लोगों के साथ आँखों द्वारा अच्छा संपर्क बनाए रखना चाहिए।

ग. नकारात्मक प्रतिक्रिया होने पर उसे अपनी प्रस्तुति में बदलाव करने चाहिए।

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा विषय

आप अपने संदेश की प्रस्तुति को बेहतर बनाने के लिए प्रतिक्रया का उपयोग कैसे कर सकते हैं?

३. दर्शकों के साथ पहचान।

क. दर्शकों के साथ अपनी पहचान बनाने के लिए, आप करुणा व्यक्त कर सकते हैं या कमज़ोर हो सकते हैं।

ख. हालाँकि, लोग बता सकते हैं कि क्या आप ईमानदार हैं या नहीं। वे आपको असली रूप में देखना चाहते हैं।

ग. लोग यह महसूस करना चाहते हैं कि वे आपको जानते हैं और यह देखना चाहते हैं कि आप उनके साथ अपनी पहचान बना सकते हैं या नहीं।

टिप्पणियाँ -

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा विषय

आप उन लोगों से कैसे संबंधित हो सकते हैं जिनसे आप एक प्रचारक या शिक्षक के रूप में बात करते हैं?

४. शरीर की मुद्रा।

क. यह अकसर कहा जाता है, "कार्य शब्दों से अधिक ज़ोर से बोलते हैं।" अशाब्दिक संचार बहुत महत्वपूर्ण है (नीतिवचन ६:१२,१३ देखें)।

ख. चेहरे के भाव, हावभाव, स्पर्श, खुजलाना, शरीर की स्थिति में बदलाव, सिर हिलाना, आँखों का संपर्क, पैरों का हिलना आदि सभी दर्शकों से संवाद करते हैं।

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा विषय

शरीर की मुद्रा का सकारात्मक उपयोग कैसे किया जा सकता है? यह नकारात्मक कैसे हो सकता है?

टिप्पणियाँ -

ख. एक संदेश प्रस्तुत करने के लिए विचार।

१. आवाज़ का उपयोग।

क. अपने बोलने के तरीके को बदलकर एक ही बात कई अलग-अलग तरीकों से कही जा सकती है।

ख. आवाज़ के निम्नलिखित क्षेत्रों में से प्रत्येक जो कहा गया है उसका अर्थ बदल सकता है:

१) आवाज़ में परिवर्तन।

२) ध्वनि।

३) बोलने की गति।

४) ध्वनि और गति में उतार-चढ़ाव।

५) कुछ शब्दों या वाक्यांशों पर बल।

६) विराम/ठहराव (मौन का उपयोग)।

कक्षा के लिए गतिविधि:

यह दर्शाने के लिए यूहन्ना ३:१६ का उपयोग करें कि आवाज़ को विभिन्न तरीकों से कैसे उपयोग किया जाए।

तीन अलग-अलग आवाज़ में परिवर्तन के साथ पद को कहें। छात्रों से पूछें कि प्रत्येक ने पद के अर्थ या प्रभाव को कैसे बदला (इस प्रश्न को निम्नलिखित मामलों में भी दोहराएं)।

तीन अलग-अलग खंडों का उपयोग करके पद कहें।

तीन अलग-अलग गति का उपयोग करते हुए पद कहें।

ध्वनि और गति की भिन्नता का उपयोग करके पद कहें।

पद को तीन अलग-अलग बार कहें। पहले "जगत" शब्द पर बल दें। इसके बाद "दिया" शब्द पर बल दें। अंत में, "नाश" शब्द पर बल दें।

पद को पढ़ें और "बल्कि" शब्द के बाद रुकें। पद को फिर से पढ़ें और "जो कोई" शब्द के बाद रुकें।

टिप्पणियाँ -

२. शरीर का उपयोग।

क. शरीर को भी एक ही बात को अलग तरीके से कहने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

ख. शरीर के निम्नलिखित उपयोगों में से प्रत्येक जो कहा गया है उसका अर्थ बदल सकता है।

१) शरीर की मुद्रा और स्थिति।

२) हाव-भाव।

३) चेहरे के भाव।

कक्षा के लिए गतिविधि:

यह दर्शाने के लिए यूहन्ना ३:१६ का उपयोग करें कि शरीर को विभिन्न तरीकों से कैसे उपयोग किया जाए।

तीन अलग-अलग स्थितियों पर रहते हुए पद कहें। छात्रों से पूछें कि प्रत्येक ने पद के अर्थ या प्रभाव को कैसे बदला (निम्नलिखित मामलों में से प्रत्येक के लिए इस प्रश्न को दोहराएं)।

तीन अलग-अलग हाव-भाव का उपयोग करते हुए पद कहें।

तीन अलग-अलग चेहरे के भाव के साथ पद कहें।

३. अन्य बातें।

क. ऊर्जा के स्तर में विविधता।

१) कुछ वक्ता पूरी प्रस्तुति के दौरान बहुत ज़ोर से बोलते हैं।

२) अन्य वक्ता पूरी प्रस्तुति के दौरान धीरे बोलते हैं।

३) इन दृष्टिकोणों में संतुलन बनायें रखें। अपने ऊर्जा स्तर में विविधता का उपयोग करने का प्रयास करें।

टिप्पणियाँ -

ख. उत्साह।

१) एक दर्शक जानता है कि क्या आप उनकी और संदेश की परवाह करते हैं या नहीं। आप जो कह रहे हैं उसके प्रति उत्साही रहें।

२) उत्साह दूसरों में फैलता है।

ग. उच्चारण।

१) यह बहुत महत्वपूर्ण है कि दर्शक आपको स्पष्ट रूप से सुनें और समझें।

२) अच्छे उच्चारण पर ध्यान दें।

घ. सम्बन्ध/तालमेल।

१) सर्वश्रेष्ठ वक्ता अपने श्रोताओं के साथ सम्बन्ध/तालमेल स्थापित कर सकते हैं। श्रोता कह सकता है, "मुझे ऐसा लगता है कि मैं इन्हें काफ़ी समय से जानता हूँ।"

२) एक सम्बन्ध/तालमेल विकसित करने से लोग आपकी बात सुनना चाहेंगे।

ङ. दृश्यात्मक उपकरण।

१) इसमें चार्ट और आरेख के अलावा और भी कई चीज़ें शामिल हैं। अधिक दृश्यात्मक प्रस्तुति को पूरा करने के लिए वक्ता दर्शकों का प्रतिभागियों के रूप में उपयोग कर सकता है। वह एक दृश्यात्मक उपकरण के रूप में रोल प्ले कर सकता है। वह "रंगमंच-सामग्री (प्रॉप्स)" का उपयोग दृश्यात्मक उपकरण के रूप में कर सकता है। रचनात्मक बनने की कोशिश करें।

२) रचनात्मकता आपको अधिक प्रभावी बनाने में मदद करेगी।

V. परिशिष्टः मूल्यांकन प्रपत्र।

	अंक संभावित	संभावित प्राप्त हुआ
प्रस्तावना	४	
विषय	४	
निष्कर्ष	४	
स्पष्टीकरण	४	
उदाहरण	४	
अनुप्रयोग	४	
संरचना/प्रवाह	४	
एक से दूसरे में जाना	४	
बाइबल का प्रयोग	४	
दोहराव का उपयोग	४	
विशेष	४	
गंभीर	४	
रोचक	४	
कुलः सन्देश	५२	
चेहरे के भाव	४	
आवाज़ में परिवर्तन	४	
ध्वनि	४	
उच्चारण	४	
गति	४	
विराम/ठहराव	४	
उत्साह	४	
शरीर की मुद्रा	४	
हाव-भाव	४	
ऊर्जा में विविधता	४	
सम्बन्ध/तालमेल	४	
दृश्यात्मक उपकरण (विजुअल एड्स)	४	
कुलः संदेशवाहक	४८	
कुल योग	१००	

टिप्पणियाँ -

टिप्पणियाँ -

प्रचार करना व शिक्षा देना: अंतिम टिप्पणियाँ

[१] माइकल पी. ग्रीन, एड., इलस्ट्रेशन्स फॉर बिब्लिकल प्रीचिंग (ग्रैंड रैपिड्स, एमआई: बेकर बुक हाउस,१९८९, पृष्ठ २८३।